अनूठा गणतंत्र

ना रुके यह रथ विजय का

आज ऐसा काम करदें

तन मन और जीवन अपना

वतन के नाम करदें|

आदरणीय प्रधानाचार्या जी, अध्यापकगण एवं प्रिय सहपाठियों| आज में कक्षा सात डी की छात्रा अक्षरा शर्मा आपके सामने गणतंत्र दिवस पर एक कविता प्रस्तुत करने जा रही हूँ|

नील गगन में बड़ी शान से, आज तिरंगा लहराया

भारत का गणतंत्र अनूठा, सारे जग को बतलाया|

पराधीन भारत माता ने, जाग ली अंगडाई थी

वीरों की टोली की टोली, शीश चढ़ाने आयी थी|

आज़ादी की जंग चली जब, देख फिरंगी घबराया

भारत का गणतंत्र अनूठा, सारे जग को बतलाया|

शत शत नमन है उन वीरों को, आज़ादी थी दिलवाई

फांसी के फंदे पर झूले, सीने पर गोली खाई|

कितने अत्याचार सहे थे, जेलों में जब भिजवाया

भारत का गणतंत्र अनूठा, सारे जग को बतलाया|

जाति धर्म का भेद नही, सबको समता का अधिकार है

मौके सब को मिले बराबर कोई नही लाचार है|

अनुपम सविधान है अपना, जिसको हम ने अपनाया

भारत का गणतंत्र अनूठा, सारे जग को बतलाया

धन्यवाद

अक्षरा शर्मा कक्षा 7 डी